

।।सौभाग्यप्रदाता अग्निदेव स्तुति।।

Page | 1



गुरु मंत्र-दीक्षा एवं कार्य सिद्धि हेतु यज्ञ, पूजा एवं अनुष्ठानादि
करवाने के लिये सम्पर्क करें- श्री राज वर्मा जी

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevraajverma.com

Page | 2

शान्ति ने कहा- समस्त प्राणियों के साधक महात्मा अग्निदेव को नमस्कार है। उनके एक, दो और पांच स्थान हैं। वे राजसूय-यज्ञ में छः स्वरूप धारण करते हैं। समस्त देवताओं को वृत्ति देने वाले अत्यन्त तेजस्वी अग्निदेव को नमस्कार है। जो सम्पूर्ण जगत् के कारणरूप तथा पालन करने वाले हैं, उन अग्निदेव को प्रणाम है। अग्ने! तुम सम्पूर्ण देवताओं के मुख हो। भगवन्! तुम्हारे द्वारा ग्रहण किया हुआ हविष्य सब देवताओं को तृप्त करता है। तुम्हीं समस्त देवताओं के प्राण हो। तुममें हवन किया हुआ हविष्य अत्यन्त पवित्र होता है, फिर वही मेघ बनकर जलरूप में परिणत हो जाता है। फिर उस जल से सब प्रकार के अन्न आदि उत्पन्न होते हैं। अनिलसारथे! फिर उन समस्त अन्न आदि से सब जीव सुखपूर्वक जीवन धारण करते हैं। अग्निदेव! तुम्हारे द्वारा उत्पन्न की हुई औषधियों से मनुष्य यज्ञ करते हैं। यज्ञों से देवता, दैत्य तथा राक्षस तृप्त होते हैं।

हुताशन! उन यज्ञों के आधार तुम्हीं हो, अतः अग्ने! तुम्हीं सबके आदिकारण और सर्वस्वरूप हो। देवता, दानव, यक्ष, दैत्य, गन्धर्व, राक्षस, मनुष्य, पशु, वृक्ष, मृग, पक्षी तथा सर्प- ये सभी तुमसे ही तृप्त होते और तुम्हीं से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। तुम्हीं से इनकी उत्पत्ति होती है और तुम्हीं में इनका लय होता है। देव! तुम्हीं जल की सृष्टि करते और तुम्हीं उसको पुनः सोख लेते हो। तुम्हारे पकाने से ही जल प्राणियों की पुष्टि करता है। तुम देवताओं में तेज, सिद्धों में कान्ति, नागों में विष और पक्षियों में वायुरूप से स्थित हो। मनुष्यों में क्रोध, पक्षी और मृग आदि में मोह, वृक्षों में स्थिरता, पृथ्वी में कठोरता, जल में द्रवत्व तथा वायु में जलरूप से तुम्हारी स्थिति है। अग्ने! व्यापक होने के कारण तुम आकाश में आत्मारूप से स्थित हो। अग्निदेव! तुम सम्पूर्ण भूतों के अन्तःकरण में विचरते तथा सबका पालन करते हो। विद्वान् पुरुष तुमको एक कहते हैं, तथा फिर वे ही तुम्हें तीन प्रकार का बतलाते हैं। तुम्हें आठ रूपों में कल्पित करके ऋषियों ने आदियज्ञ का अनुष्ठान किया था। महर्षिगण इस विश्व को तुम्हारी सृष्टि बतलाते हैं। हुताशन! तुम्हारे बिना यह सम्पूर्ण जगत् तत्काल नष्ट हो जायेगा। ब्राह्मण हव्य-कव्य आदि के द्वारा 'स्वाहा' और 'स्वधा' का

उच्चारण करते हुए तुम्हारी पूजा करके अपने कर्मों के अनुसार विहित उत्तम गति को प्राप्त होते हैं। देवपूजित अग्निदेव! प्राणियों के परिणाम, आत्मा और वीर्यस्वरूप तुम्हारी ज्वालाएं तुमसे ही निकलकर सब भूतों का दाह करती हैं। परम कान्तिमान् अग्निदेव! संसार की यह सृष्टि तुमने ही की है। तुम्हारा ही यज्ञरूप वैदिक कर्म सर्वभूतमय जगत् है। पीले नेत्रों वाले अग्निदेव! तुम्हें नमस्कार है। हुताशन! तुम्हें नमस्कार है। पावक! आज तुम्हें नमस्कार है। हव्यवाहन! तुम्हें नमस्कार है। तुम ही खाये-पीये हुए पदार्थों को पचाने के कारण विश्व के पालक हो। तुम्हीं खेती को पकाने वाले और जगत् के पोषक हो। तुम्हीं मेघ हो, तुम्हीं वायु हो और तुम्हीं समस्त प्राणियों का पोषण करने के लिये खेती के हेतुभूत बीज हो। भूत, भविष्य और वर्तमान- सब तुम्हीं हो। तुम्हीं सब जीवों के भीतर प्रकाश हो। तुम्हीं सूर्य और तुम्हीं अग्नि हो। अग्ने! दिन-रात तथा दोनों संध्याएं तुम्हीं हो। सुवर्ण तुम्हारा वीर्य है। तुम सुवर्ण की उत्पत्ति के कारण हो। तुम्हारे गर्भ में सुवर्ण की स्थिति है। सुवर्ण के समान तुम्हारी कान्ति है। मुहूर्त, क्षण, त्रुटि और लव-सब तुम्हीं हो। जगत्प्रभो! कला, काष्ठा और निमेष आदि तुम्हारे ही रूप हैं। यह सम्पूर्ण दृश्य तुम्हीं हो। परिवर्तनशील काल भी

तुम्हारा ही स्वरूप है। प्रभो! तुम्हारी जो काली नामक जिह्वा है, वह काल को आश्रय देने वाली है। उसके द्वारा तुम पापों के भय से हमें बचाओ तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। तुम्हारी जो कराली नामकी जिह्वा है, वह महाप्रलय की कारणरूपा है। उसके द्वारा हमें पापों तथा इहलोक के महान् भय से बचाओ। तुम्हारी जो मनोजवा नामक जिह्वा है, वह लघिमा नामक गुणस्वरूपा है। उसके द्वारा तुम पापों तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। तुम्हारी जो सुलोहिता नामक जिह्वा है, वह सम्पूर्ण भूतों की कामनाएं पूर्ण करती है। उसके द्वारा तुम पापों तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। तुम्हारी जो सुधूम्रवर्णा नामक जिह्वा है, वह प्राणियों के रोगों का दाह करने वाली है। उसके द्वारा तुम पापों तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। तुम्हारी जो स्फुलिंगिनी नामक जिह्वा है जिससे सम्पूर्ण जीवों के शरीर उत्पन्न हुए हैं, उसके द्वारा तुम पापों तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। तुम्हारी जो विश्वा नामक जिह्वा है, वह समस्त प्राणियों का कल्याण करने वाली है। उसके द्वारा तुम पापों तथा इस लोक के महान् भय से हमारी रक्षा करो। हुताशन! तुम्हारे नेत्र पीले, ग्रीवा लाल और रंग सांवला है। तुम

सब दोषों से हमारी रक्षा करो और संसार से हमारा उद्धार करो। वह्नि, सप्तार्चि, कृशानु, हव्यवाहन, अग्नि, पावक, शुक्र तथा हुताशन- इन आठ नामों से पुकारे जाने वाले अग्निदेव! तुम प्रसन्न हो जाओ। तुम अक्षय, अचिन्त्य समृद्धिमान, दुःसह एवं अत्यन्त तीव्र वह्नि हो। तुम मूर्तरूप में प्रकट होकर अविनाशी कहे जाने वाले सम्पूर्ण भयंकर लोकों को भस्म कर डालते हो अथवा तुम अत्यन्त पराक्रमी हो- तुम्हारे पराक्रम की कहीं सीमा नहीं है। हुताशन! तुम सम्पूर्ण जीवों के हृदय-कमल में स्थित उत्तम, अनन्त एवं स्तवन करने योग्य सत्त्व हो। तुमने इस सम्पूर्ण चराचर विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम एक होकर भी यहां अनेक रूपों में प्रकट हुए हो। पावक! तुम अक्षय हो, तुम्हीं पर्वतों और वनोंसहित सम्पूर्ण पृथ्वी, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य तथा दिन-रात हो। महासागर के उदर में बड़वानल के रूप में तुम्हीं हो तथा तुम्हीं अपनी परा विभूति के साथ सूर्य की किरणों में स्थित हो। भगवन्! तुम हवन किये हुए हविष्य का साक्षात् भोजन करते हो, इसलिये बड़े-बड़े यज्ञों में नियमपरायण महर्षिगण सदा तुम्हारी पूजा करते हैं। तुम यज्ञ में स्तुत होकर सोमपान करते हो तथा वषट् का उच्चारण करके इन्द्र के उद्देश्य से दिये हुए हविष्य को भी तुम्हीं भोग लगाते

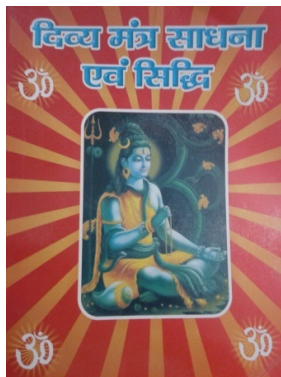
हो और इस प्रकार पूजित होकर तुम सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करते हो। विप्रगण अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिये सदा तुम्हारा ही यजन करते हैं। सम्पूर्ण वेदांगों में तुम्हारी महिमा का गान किया जाता है। यज्ञपरायण श्रेष्ठ ब्राह्मण तुम्हारी ही प्रसन्नता के लिये सर्वदा अंगोसहित वेदों का पठन-पाठन करते रहते हैं। तुम्हीं यज्ञपरायण ब्रह्मा, सब भूतों के स्वामी भगवान् विष्णु, देवराज इन्द्र, अर्यमा, जल के स्वामी वरुण, सूर्य तथा चन्द्रमा हो। सम्पूर्ण देवता और असुर भी तुम्हीं को हविष्यों द्वारा संतुष्ट करके मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं। कितने ही महान् दोष से दूषित वस्तु क्यों न हो, वह सब तुम्हारी ज्वालाओं के स्पर्श से शुद्ध हो जाती है। सब स्नानों में तुम्हारे भस्म से किया हुआ स्नान ही सबसे बढ़कर है, इसीलिये मुनिगण संध्याकाल में उसका विशेष रूप से सेवन करते हैं। शुचि नामवाले अग्निदेव! मुझ पर प्रसन्न होओ। वायुरूप! मुझ पर प्रसन्न होओ। अत्यन्त निर्मल कान्तिवाले पावक! मुझ पर प्रसन्न होओ। विद्युन्मय! आज मुझ पर प्रसन्न होओ। हविष्यभोजी अग्निदेव! तुम मेरी रक्षा करो। वह्ने! तुम्हारा जो कल्याणमय स्वरूप है, देव! तुम्हारी जो सात ज्वालामयी जिह्वाएं हैं, उन सबके द्वारा तुम

मेरी रक्षा करो- ठीक उसी तरह, जैसे पिता अपने पुत्र की रक्षा करता है।

फल- शान्ति के द्वारा इस प्रकार स्तुति करने पर ज्वालाओं से घिरे भगवान् अग्निदेव हुए उनके समक्ष प्रकट हुए। शान्ति को वर प्रदान करते हुए अग्निदेव ने कहा- जो एकाग्रचित्त होकर इस स्तोत्र के द्वारा मेरी स्तुति करेगा, उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण होंगी तथा उसे पुण्य की भी प्राप्ति होगी। यज्ञों में, पर्व के समय, तीर्थों में और होमकर्म में जो धर्म के लिये मेरे इस स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके लिये यह अत्यन्त पुष्टिकारक होगा। होम न करने तथा अयोग्य समय में होम करने आदि के जो दोष हैं और अयोग्य पुरुषों द्वारा हवन करने से जो दोष उत्पन्न होते हैं, उन सबको यह स्तोत्र सुनने मात्र से शान्त कर देता है। पूर्णिमा, अमावस्या तथा अन्य पर्वों पर मनुष्यों द्वारा सुना हुआ मेरा यह स्तोत्र उनके पापों को नाश करने वाला होता है।

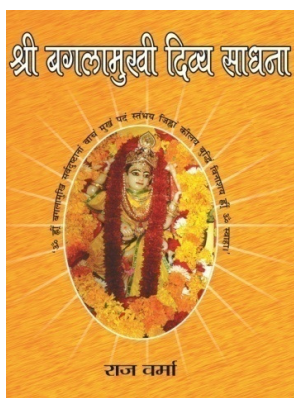
Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi



Page | 9

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana



To purchase these books contact to Hari Publications on given numbers. **Mob- 09027154151, 09897035137**